IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

विद्यालय प्रकृति के सन्दर्भ में शिक्षकों के मूल्यों का अध्ययन

षषि चौधरी

सारांष

शिक्षा का मूल उद्देश्य 'शिक्षते उपादीयते विद्यामया सा शिक्षा' अर्थात् जिसके द्वारा ज्ञान उपादान किया जाए वह शिक्षा है। शिक्षा का मूल उद्ददेश्य व्यक्ति को एक अच्छा मनुष्य बनाना है, जो श्रेष्ठ जीवन मूल्यों से युक्त हो। उसमें 'वसुधैवकुटुम्बकम्' की भावना तथा द्रुतगति से बदलते युग के साथ मानव कल्याण और उसके विकास हेतु सदा तत्पर रहने की क्षमता हो। मनुष्य जीवनपर्यन्त सीखता रहता है तथा उसके अनुभवों में निरन्तर अभिवृद्धि होती है। जैसे–जैसे वह अधिकाधिक सीखता जाता है तथा परिपक्व होता है वह ऐसे अनुबन्ध प्राप्त करता है जो उसके व्यवहार को निर्देशित करते हैं। ये निर्देशक जीवन को दिशा प्रदान करते हैं। इन्हें मूल्य कहा जा सकता है। व्यवहार के निर्देशक के रूप में मूल्य अनुभवों के विकसित व परिपक्व होने के साथ–साथ विकसित तथा परिपक्व होते हैं। मूल्य किसी वस्तु या स्थिति का वह गुण है जो समालोचना का वरीयता प्रकट करता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में उच्च प्राथमिक स्तरीय षिक्षकों के मूल्यों के विभिन्न पक्षों जैसे – धार्मिक, सामाजिक, लोकतान्त्रिक, सौन्दर्यात्मक, आर्थिक, ज्ञानात्मक, सुखवादी, षक्ति, परिवार–प्रतिष्ठा और स्वास्थ्य मूल्यों का विद्यालय प्रकृति के सन्दर्भ में अध्ययन किया गया है।

मूलषब्द –शिक्षा,मूल्य, षिक्षक, व्यवहार।

प्रस्तावना :

मूल्य परक शिक्षा की अवधारणा प्राचीन है। अर्थात् मूल्यों का सम्बन्ध भावनात्मक परिवर्तन से है, न कि किताबी दृष्टान्तो से है। जैसे सूर्योदय होने पर सूर्यज्योति सभी सतहो पर समान रूप से प्रकाश फैलाती है उसी प्रकार हमारे भीतर हृदय में भी ज्ञान की ज्योति प्रत्येक विचार की ऊँचाई, चौड़ाई और गहराई को प्रकाशित और ऊर्जावान करेगी तभी मानव मूल्यों की शिक्षा का काम सार्थक हो सकेगा। इसके लिए शिक्षक को जागना होगा। इसके अतिरिक्त कोई भागीरथी नहीं है जो कि शिक्षा में मूल्यों की गंगा को पृथ्वी पर ला सके। शिक्षक होना बड़ी साधना है। शिक्षक वही है जो प्रसुप्त समस्याओं को जगा देता है और जिज्ञासा को जागृत कर देता है और बच्चों को उनके स्वयं के अनुसंधान के लिए साहस और अभय से भर देता है। शिक्षक ही सभ्यता का दीपक जलाए रखने में सक्षम है। हमारे देश के निर्माण में उनका योगदान बहुमूल्य रहा है। और अभी भी रह सकता है यदि वे अतीत की परम्पराओं का पालन कर मनुष्य, समाज और राष्ट्र के उत्थान पर ध्यान दें। यह बहुत बड़ा उत्तरदायित्व है, यदि शिक्षक इसे पूरा कर सकेगा तो नये जीवन मूल्य और एक नयी मनुष्यता का जन्म हो सकता है।

समस्या कथन

→ विद्यालय प्रकृति के सन्दर्भ में शिक्षकों के मूल्यों का अध्ययन।

अध्ययन के उद्देश्य

- सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों के मूल्यों का अध्ययन करना।
- सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों के धार्मिक मूल्य का अध्ययन करना।
- सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों के सामाजिक मूल्य का अध्ययन करना।
- सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों के लोकतान्त्रिक मूल्य का अध्ययन करना।
- सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों के सौन्दर्यात्मक मूल्य का अध्ययन करना।
- सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों के आर्थिक मूल्य का अध्ययन करना।
- सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों के ज्ञानात्मक मूल्य का अध्ययन करना।
- सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों के सुखवादी मूल्य का अध्ययन करना।
- सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों के शक्ति मूल्य का अध्ययन करना।
- सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों के परिवार–प्रतिष्ठा मूल्य का अध्ययन करना।
- सरकारी एवं गैर–सरकारी उच्च प्राथमिक शिक्षकों के स्वास्थ्य मूल्य का अध्ययन करना।

परिकल्पनाऐं

- **परिकल्पना–1 :** सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- **उप–परिकल्पना–1.1 :** सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों के धार्मिक मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- **उप–परिकल्पना–1.2 :** सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों के सामाजिक मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- **उप–परिकल्पना–1.3 :** सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों के लोकतान्त्रिक मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- **उप–परिकल्पना–1.4 :** सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों के सौन्दर्यात्मक मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- **उप–परिकल्पना–1.5 :** सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों के आर्थिक मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- **उप–परिकल्पना–1.6 :** सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों के ज्ञानात्मक मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- **उप–परिकल्पना–1.7 :** सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों के सुखवादी मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- **उप–परिकल्पना–1.8 :** सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों के शक्ति मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

- **उप–परिकल्पना–1.9 :** सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों के परिवार–प्रतिष्ठा मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- **उप–परिकल्पना–1.10 :** सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों के स्वास्थ्य मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

अध्ययन के चर

स्वतन्त्र चर : विद्यालय प्रकृति

आश्रित चर : मूल्य

संक्रियात्मक परिभाषायें

शिक्षक

प्रस्तुत शोध में उच्च प्राथमिक स्तरीय शिक्षक से अभिप्राय सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों में कक्षा 6,7,8 में शिक्षण करने वाले शिक्षकों से है।

मूल्य

मूल्य वे विश्वास हैं जिन्हें व्यक्ति अनुभव के द्वारा अर्जित करता है परन्तु मूल्य केवल विश्वास ही नहीं हैं। ये अभिवृत्तियों से भी भिन्न हैं। मूल्यों का संबंध ऐसे वांछित लक्ष्यों, आदर्शों या कार्य के ढ़ंगों से संबंधित हैं जिनके कारण व्यक्ति एक प्रकार का व्यवहार न करके दूसरे प्रकार का व्यवहार करता है स्पष्ट है कि मूल्यों के कारण व्यक्ति के व्यवहार में चयनशीलता पायी जाती है अथवा यह कहें कि मूल्यों में भिन्नता के कारण व्यक्ति के व्यवहारों में भिन्नता होती है।

अनुसंधान विधि

प्रस्तुत शोध की समस्या की प्रकृति को ध्यान में रखकर सर्वेक्षण विधि को शोध विधि के रूप में प्रयुक्त किया गया है।

प्रदत्तों के स्रोत

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों के स्रोत प्राथमिक हैं। उच्च प्राथमिक स्तर पर शिक्षण करने वाले शिक्षक प्रदत्तों के स्रोत हैं।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध हेतु जनसंख्या के रूप में उत्तरप्रदेश के आगरा मंडल के मथुरा तथा आगरा, जिले के उच्च प्राथमिक स्तरीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक हैं।

न्यायदर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा आगरा मंडल के मथुरा और आगरा जिले के उच्च प्राथमिक स्तरीय विद्यालयों में कार्यरत कुल 800 शिक्षकों ;400 सरकारी तथा 400 गैर–सरकारी षिक्षकोंको यादृच्छिक विधि के माध्यम से न्यादर्ष हेतु चयन किया गया है।

शोध उपकरण

शोधकर्त्री द्वारा प्रदत्त संकलन हेतु पर्सनल वैल्यूज क्वैष्नेयर ;जी. पी. षैरी द्वारा निर्मितद्ध शोध उपकरण प्रयुक्त किया गया है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

अध्ययन के उद्देश्यों एवं प्रदत्तों की प्रकृति के आधार पर प्रदत्तों का विष्लेषण मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण सांख्यिकी द्वारा किया गया है।

विद्यालय प्रकृति के सन्दर्भ में शिक्षकों के मूल्यों का प्रस्तुतीकरण, विश्लेषण एवं व्याख्या

सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों के विभिन्न मूल्यों से सम्बन्धी प्रदत्तों के विश्लेषण को तालिका 1 द्वारा अग्र प्रकार प्रस्तुत किया गया है।

तालिका– 1– विद्यालय प्रकृति के सन्दर्भ में शिक्षकों के विभिन्न मूल्यों के अन्तर का सार्थकता स्तर

विभिन्न मूल्य	विद्यालयप्रकृित	;छद्ध	;डद्ध	;ैण्क्ण्द्ध	क्ि	ज. टंसनम	ज्ंइसम टंसनम	ैपहदपपिबंदबम क्पमितमदबम
धार्मिक मूल्य	सरकारी	400	12ण्15	2ण्75	798	2ण्06	0ण्05 1ण्96	सार्थक अन्तर है।
	गैर–सर	400	11ण्75	2ण्76				
सामाजिक मूल्य	सरकारी	400	7ण्71	2ण्70	798	0ण्43	0ण्05 1ण्96	सार्थक अन्तरनहीं है।
	गैर–सर	400	7ण्80	2ण्70				
लोकतांत्रिक मूल्य	सरकारी	400	11ण्23	3ण्26	798	2ण्31	0ण्05 1ण्96	सार्थक अन्तर है।
	गैर–सर	400	10ण्70	3ण्17				
सौन्दर्यात्मक मूल्य	सरकारी	400	11ण्85	2ण्54	798	0ण्61	0ण्05 1ण्96	सार्थक अन्तर नहीं है।
	गैर–सर	400	11ण्96	2ण्41				
आर्थिक मूल्य	सरकारी	400	15ण्16	2ण्98	798	0ण्06	0ण्05 1ण्96	सार्थक अन्तर नहीं है।
	गैर–सर	400	15ण्14	2ण्85				
ज्ञानात्मक मूल्य	सरकारी	400	10ण्99	3ण्05	798	0ण्03	0ण्05 1ण्96	सार्थक अन्तर नहीं है।
	गैर–सर	400	10ण्85	3ण्08				
सुखवादी मूल्य	सरकारी	400	14ण्01	2ण्87	798	0ण्97	0ण्05 1ण्96	सार्थक अन्तर नहीं है।
	गैर–सर	400	14ण्21	2ण्77				
शक्ति मूल्य	सरकारी	400	14ण्83	2ण्90	798	1ण्12	0ण्01 2ण्58	सार्थक अन्तर नहीं है।
	गैर–सर	400	15ण्06	2ण्83				
परिवार–प्रतिष्ठा मूल्य	सरकारी	400	12ण्92	2ण्80	798	1ण्26	0ण्05 1ण्96	सार्थक अन्तर नहीं है।
	गैर–सर	400	12ण्67	2ण्91				

स्वास्थ्य मूल्य	सरकारी	400	8ण्58	2ण्55	798	0ण्82	0ण्05 1ण्96	सार्थक अन्तर नहीं है।
	गैर–सर	400	8ण्74	2ण्75				

रेखाचित्र 1–सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों के विभिन्न मूल्य

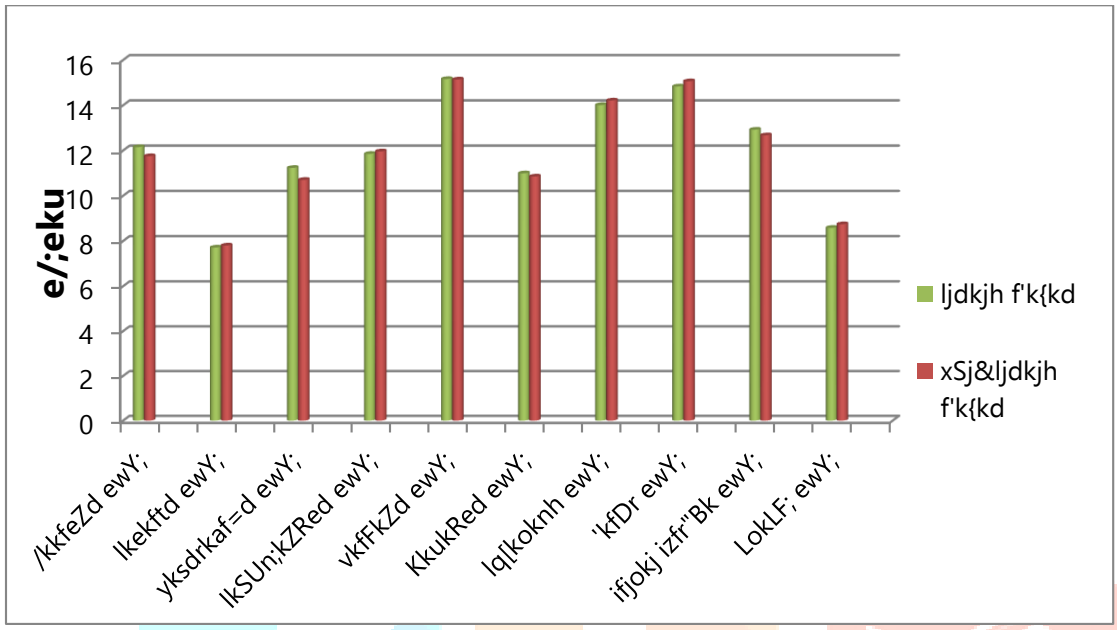

तालिका 1 व रेखाचित्र 1 द्वारा **विद्यालय प्रकृति के सन्दर्भ में**शिक्षकों कमूल्यों की व्याख्या इस प्रकार है–

धार्मिक मूल्य– सरकारी शिक्षकों के धार्मिक मूल्य का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 12.15 व 2.75 है तथा गैर–सरकारी शिक्षकों के धार्मिक मूल्य का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 11.75 व 2.76 है। प्राप्त मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता जाँच करने पर प्राप्त टी–मूल्य 2.06 है जो टी के सारणी मूल्य से 0.01 स्तर से कमव 0.05 स्तर पर 1.96 से अधिक है।

प्रस्तुत विश्लेषण के आधार पर **उप–परिकल्पना 1.1** ''सरकारी एवं गैर–सरकारी उच्च प्राथमिक शिक्षकों के धार्मिक मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है'' अस्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि उच्च प्राथमिक सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों का धार्मिक मूल्य समान नहीं होता है।

सामाजिक मूल्य –सरकारी शिक्षकों के सामाजिक मूल्य का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 7.71 व 2.70 है तथा गैर–सरकारी शिक्षकों के सामाजिक मूल्य का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 7.80 व 2.70 है। प्राप्त मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता जाँच करने पर प्राप्त टी–मूल्य 0.43 है। टी का सारणी मूल्य 0.05 स्तर पर 1.96 है। प्राप्त टी–मूल्य सारणी मूल्य से कम है।

प्रस्तुत विश्लेषण के आधार पर **उप–परिकल्पना 1.2** ''सरकारी एवं गैर–सरकारी उच्च प्राथमिक शिक्षकों के सामाजिक मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है'' स्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि उच्च प्राथमिक सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों का सामाजिक मूल्य समान होता है। उच्च प्राथमिक स्तर पर सर्वाधिक सरकारी

एवं गैर–सरकारी शिक्षकों का सामाजिक मूल्य समान रूप में अति निम्न स्तर (87: सरकारी व 85: गैर–सरकारी) का पाया गया है।

लोकतान्त्रिक मूल्य –सरकारी शिक्षकों के लोकतान्त्रिक मूल्य का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 11.23 व 3.26 है तथा गैर–सरकारी शिक्षकों के लोकतान्त्रिक मूल्य का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 10.70 व 3.17 है। प्राप्त मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता जाँच करने पर प्राप्त टी–मूल्य 2.31 है जो टी के सारणी मूल्य से 0.01 स्तर से कमव 0.05 स्तर पर 1.96 से अधिक है।

प्रस्तुत विश्लेषण के आधार पर **उप–परिकल्पना 1.3** ''सरकारी एवं गैर–सरकारी उच्च प्राथमिक शिक्षकों के लोकतान्त्रिक मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है'' अस्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि उच्च प्राथमिक सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों का लोकतान्त्रिक मूल्य समान नहीं होता है।

सौन्दर्यात्मक मूल्य –सरकारी शिक्षकों के सौन्दर्यात्मक मूल्य का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 11.85 व 2.54 है तथा गैर–सरकारी शिक्षकों के सौन्दर्यात्मक मूल्य का मध्यमान व मानक विचलन 11.96 व 2.41 है। प्राप्त मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता जाँच करने पर प्राप्त टी–मूल्य 0.61 है। टी का सारणी मूल्य 0.05 स्तर पर 1.96 है। प्राप्त टी–मूल्य सारणी मूल्य से कम है।

प्रस्तुत विश्लेषण के आधार पर **उप–परिकल्पना 1.4** ''सरकारी एवं गैर–सरकारी उच्च प्राथमिक शिक्षकों के सौन्दर्यात्मक मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है'' स्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि उच्च प्राथमिक सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों का सौन्दर्यात्मक मूल्य समान होता है। उच्च प्राथमिक स्तर पर सर्वाधिक सरकारी व गैर–सरकारी शिक्षकों का सौन्दर्यात्मक मूल्य समान रूप से सामान्य स्तर (56: सरकारी व 61: गैर–सरकारी) का पाया गया है।

आर्थिक मूल्य –सरकारी शिक्षकों के आर्थिक मूल्य का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 15.16 व 2.98 है तथा गैर–सरकारी शिक्षकों के आर्थिक मूल्य का मध्यमान व मानक विचलन 15.14 व 2.83 है। प्राप्त मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता जाँच करने पर प्राप्त टी–मूल्य 0.06 है। टी का सारणी मूल्य 0.05 स्तर पर 1.96 है। प्राप्त टी–मूल्य सारणी मूल्य से कम है।

प्रस्तुत विश्लेषण के आधार पर **उप–परिकल्पना 1.5** ''सरकारी एवं गैर–सरकारी उच्च प्राथमिक शिक्षकों के आर्थिक मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है'' स्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि उच्च प्राथमिक सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों का आर्थिक मूल्य समान होता है। उच्च प्राथमिक स्तर पर सर्वाधिक सरकारी व गैर–सरकारी शिक्षकों का आर्थिक मूल्य समान रूप से अति उच्च स्तर (59: सरकारी व 60: गैर–सरकारी) का पाया गया है।

ज्ञानात्मक मूल्य –सरकारी शिक्षकों के ज्ञानात्मक मूल्य का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 10.57 व 2.85 है तथा गैर–सरकारी शिक्षकों के ज्ञानात्मक मूल्य का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 10.99 व 3.05 है। प्राप्त मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता जाँच करने पर प्राप्त टी–मूल्य 0.03 है। टी का सारणी मूल्य 0.05 स्तर पर 1.96 है। प्राप्त टी–मूल्य सारणी मूल्य से कम है।

प्रस्तुत विश्लेषण के आधार पर **उप–परिकल्पना 1.6** ''सरकारी एवं गैर–सरकारी उच्च प्राथमिक शिक्षकों के ज्ञानात्मक मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं होता है'' स्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि उच्च प्राथमिक सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों का ज्ञानात्मक मूल्य समान होता है। उच्च प्राथमिक स्तर पर सर्वाधिक सरकारी व गैर–सरकारी शिक्षकों का ज्ञानात्मक मूल्य समान रूप में निम्न स्तर (49: सरकारी व 47: गैर–सरकारी) का पाया गया है।

सुखवादी मूल्य –सरकारी शिक्षकों के सुखवादी मूल्य का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 14.01 व 2.87 है तथा गैर–सरकारी शिक्षकों के सुखवादी मूल्य का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 14.21 व 2.77 है। प्राप्त मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता जाँच करने पर प्राप्त टी–मूल्य 0.97 है। टी का सारणी मूल्य 0.05 स्तर पर 1.96 है। प्राप्त टी–मूल्य सारणी मूल्य से कम है।

प्रस्तुत विश्लेषण के आधार पर **उप–परिकल्पना 1.7** ''सरकारी एवं गैर–सरकारी उच्च प्राथमिक शिक्षकों के सुखवादी मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है'' स्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि उच्च प्राथमिक सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों का सुखवादी मूल्य समान होता है। उच्च प्राथमिक स्तर पर सर्वाधिक सरकारी व गैर–सरकारी शिक्षकों का सुखवादी मूल्य समान रूप में अति उच्च स्तर (56: सरकारी व 60: गैर–सरकारी) का पाया गया है।

शक्ति मूल्य –सरकारी शिक्षकों के शक्ति मूल्य का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 14.83 व 2.90 है तथा गैर–सरकारी शिक्षकों के शक्ति मूल्य का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 15.06 व 2.83 है। प्राप्त मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता जाँच करने पर प्राप्त टी–मूल्य 1.12 है। टी का सारणी मूल्य 0.05 स्तर पर 1.96 है। प्राप्त टी–मूल्य सारणी मूल्य से कम है।

प्रस्तुत विश्लेषण के आधार पर **उप–परिकल्पना 1.8** ''सरकारी एवं गैर–सरकारी उच्च प्राथमिक शिक्षकों के शक्ति मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है'' स्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि उच्च प्राथमिक सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों का शक्ति मूल्य समान होता है। सर्वाधिक सरकारी व गैर–सरकारी शिक्षकों का शक्ति मूल्य समान रूप में अति उच्च स्तर का पाया गया है।

परिवार–प्रतिष्ठा मूल्य –सरकारी शिक्षकों के परिवार–प्रतिष्ठा मूल्य का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 12.92 व 2.80 है तथा गैर–सरकारी शिक्षकों के परिवार–प्रतिष्ठा मूल्य का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 12.67

व 2.91 है। प्राप्त मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता जाँच करने पर प्राप्त टी–मूल्य 1.26 है। टी का सारणी मूल्य 0. 05 स्तर पर 1.96 है। प्राप्त टी–मूल्य सारणी मूल्य से कम है।

प्रस्तुत विश्लेषण के आधार पर **उप–परिकल्पना 1.9** ''सरकारी एवं गैर–सरकारी उच्च प्राथमिक शिक्षकों के परिवार–प्रतिष्ठा मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है'' स्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि उच्च प्राथमिक सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों का परिवार–प्रतिष्ठा मूल्य समान होता है। उच्च प्राथमिक स्तर पर सर्वाधिक सरकारी व गैर–सरकारी शिक्षकों का परिवार–प्रतिष्ठा मूल्य समान रूप में सामान्य स्तर (55ः सरकारी व 56ः गैर–सरकारी) का पाया गया है।

स्वास्थ्य मूल्य –सरकारी शिक्षकों के स्वास्थ्य मूल्य का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 8.58 व 2.55 है तथा गैर–सरकारी शिक्षकों के स्वास्थ्य मूल्य का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 8.74 व 2.75 है। प्राप्त मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता जाँच करने पर प्राप्त टी–मूल्य 0.82 है। टी का सारणी मूल्य 0.05 स्तर पर 1.96 है। प्राप्त टी–मूल्य सारणी मूल्य से कम है।

प्रस्तुत विश्लेषण के आधार पर **उप–परिकल्पना1.10** ''सरकारी एवं गैर–सरकारी उच्च प्राथमिक शिक्षकों के स्वास्थ्य मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है'' स्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि उच्च प्राथमिक सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों का स्वास्थ्य मूल्य समान होता है। उच्च प्राथमिक स्तर पर सर्वाधिक सरकारी व गैर–सरकारी शिक्षकों का स्वास्थ्य मूल्य समान रूप में निम्न व अति निम्न स्तर (47ः, 47ः सरकारी व 46ः, 45ः गैर–सरकारी) का पाया गया है।

इस प्रकार विभिन्न मूल्यों के विश्लेषण के आधार पर **परिकल्पना 1** ''सरकारी व गैर–सरकारी उच्च प्राथमिक शिक्षकों के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है'' स्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि उच्च प्राथमिक सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षकों के मूल्य समान होते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

→ आहूजा बेलीराम, शिक्षा के आधारभूत सिद्धान्त, ओमेगा पब्लिकेशन, नई दिल्ली–2006

→ गुप्ता, मंजू, भारत में शिक्षा प्रणाली का विकास, के. एस. के. पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, अंसारी रोड़, नई दिल्ली–110002।

→ पचौरी गिरीश, शिक्षा के दार्शनिक सिद्धान्त, लॉयल बुक डिपो, मेरठ–2006।

→ मिश्र करूणा शंकर, शिक्षा मनोविज्ञान के नये क्षितिज, अनुभव पब्लिशिंग हाउस इलाहाबाद–211006।

→ मंगल एस. के. (2008), शिक्षा मनोविज्ञान, प्रैन्टीक हॉल ऑफ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।

→ माथुर एस. एस., शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–1986।

→ लाल रमन बिहारी, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ–250102।

→ विजया लक्ष्मी गहाली (2006), प्रायरटाइजेशन ऑफ सैकण्डरी स्कूल चिल्ड्रन्स वैल्यूज बाई देअर पेरेन्ट्स एण्ड टीचर्स, एजुट्रैक नीलकमल प्रकाशन, हैदराबाद पृष्ठ–34–38।

→ सक्सेना राधारानी, शर्मा गोपीनाथ एवं शास्त्री इना, उभरते हुये भारतीय समाज में शिक्षा एवं शिक्षक, क्लासिक पब्लिकेशन्स, जयपुर।

→ सिंह मनोज कुमार, शिक्षा और समाज, आदित्य पब्लिशर्स, बीना (म. प्र.) –2000।

→ सुरेश के. जे. एवं वी. पी. जोशी (2008), जनरल ऑफ कम्यूनिटी गाइडेंस एण्ड रिसर्च, नीलकमल पब्लिकेशन्स, हैदराबाद, वोल्यूम–7, पृष्ठ–57–61।

→ शर्मा, आर. ए. शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक मूल आधार, विनय रखेजा आर. लाल. बुक डिपो. मेरठ–250001।

→ श्रीधर (2007), टीचर ऐफिसीअंसी एण्ड कोरिलेट ऑफ प्राइमरी स्कूल टीचर्स, नीलकमल पब्लिकेशन्स, हैदराबाद, वोल्यूम–7, पृष्ठ–25–27।

→ षारीरिक एवं स्वास्थ्य षिक्षा'', वॉल्यमू प्प (1981) पृ.सं. 186

→ सोनी, रेखा, ''लघु शोध–प्रबन्ध'', एमएड, आई.ए.एस.ई. मान्य विश्वविद्यालय, सरदारशहर (2006) पृ.सं. 45

→ ''एज्यूकेषनल एब्सट्रेक्टस'' वॉल्यूम–3, अंक 2, (1991)

→ सोनी, रेखा, ''लघु शोध–प्रबन्ध'', एमएड, आई.ए.एस.ई. मान्य विष्वविद्यालय, सरदारषहर (2006) पृ.सं. 41

→ बुच, एम.बी., फिफ्थ सर्वे ऑफ एज्यूकेषनल रिसर्च, वॉल्यूम–2 एनसीईआरटी (1988) नई दिल्ली, पृ. सं. 780